जवाहर लाल नेहरू शहरी नवीनीकरण (JnNURM) क्या है ?

- शहरी आबादी 1991 से 2021 तक 38% हो गई है और यह सन् 2030 तक 50% हो जायेगी
- सन् 2001 से 2011 तक शहरों की संख्या 5,000 से बढ़कर 7,000 हो गयी है
- और 2011 में देश के कुल उत्पादन (GDP) का 65% हिस्सा शहरी क्षेत्रों से आया है
- किन्तु 20% से 70% तक शहरी जनसंख्या अधिकारिक रूप से कच्ची बस्तियों में रहती है
- शहरी क्षेत्रों में पहले से ही मौजूदा आबादी के लिए बुनियादी सुविधाओं की कमी है
- इसके कारण "विकास का इंजन" रूपी शहरों की क्षमता और उत्पादकता कम हो जाती है

JnNURM भारत सरकार द्वारा 2005 में शहरों के "नवीनीकरण" का काम शुरू किया गया जिसके तीन वर्ग हैं

➢ संरचना (इन्फ्रास्ट्रक्चर निर्माण)

- पुराने शहर का नवीनीकरण
- जल आपूर्ति
- परिवहन, सड़क
- मल और जल निकास
- कूड़ा प्रबंधन
- पुरानी ईमारतों का संरक्षण

➢ शहरी गरीबों को बुनियादी सेवाएँ (बी.एस.यू.पी.)

- आवास
- जल और स्वच्छता
- मल और जल निकास

➢ सुधार शहरों को पूँजी के अनुकूल बनाने एवम् केन्द्र सरकार द्वारा धन (फंड) प्राप्त करने हेतू

- 25% भूमि कमज़ोर वर्ग के लिये
- 74th संशोधन
- उपयोगकर्त्ता शुल्क में
- डबल लेखा जोखा
- भूमि उपयोग बदलाव आसान
- संपत्ति कर में बढ़ोत्तरी
- भूमि सीमा अधिनियम खारिज़
- किराया नियंत्रण में सुधार

हर शहर को **शहरी विकास योजना (C.D.P.)** एवम् **<u>शहरी निवेश योजना (C.I.P.)</u>** तैयार करनी होगी जिसके द्वारा **निजी सार्वजनिक भागीदारी (PPP)** की मदद से शहरों में निवेश लाया जाएगा।

आधिकारिक मूल्यांकन

- जनता से विचार विमर्श नहीं किया
- CDPs केवल निवेश की योजना
- शहरी नगर निकायों ने योजनाएं नहीं बनाई
- शहरी नगर निकायों की क्षमता नहीं है
- परियोजनाओं का असर नहीं मापा
- समन्वय की कमी

<u>फिर भी "हितधारकों" (stakeholders) की आम सहमति है की एक और JnNURM हो.</u>

नागरिक समीक्षा

किन्तु कई शहरों के नागरिक समूह और संगठन इस अधिकारिक मूल्यांकन से संतुष्ट नहीं है। इसलिए जनता की बात रखने के लिए जनता की तरफ से भी एक मूल्यांकन होना चाहिये, जिसके लिये कुछ सुझाव निम्न है।

कदम 1

1. शहरों में परियोजनाओं और सुधारों की सूची के लिए मंत्रालय की वेबसाइट को देखें (http://jnnurm.nic.in & http://mhupa.gov.in).

उदाहरण : विशाखापट्नम

केन्द्र, राज्य सरकार, नगरपालिका का हिस्सा

निजी पूँजी ?

अनुमोदित लागत

% पूर्ण

परियोजनाओं की सूची

समीक्षा

परियोजना	अनुमोदित लागत	केन्द्रीय सरकार का हिस्सा	राज्य सरकार का हिस्सा	नगर पालिका का हिस्सा	अन्य स्रोत	समापन स्टेज	कितनी लागत ? कितना लाभ ? किसके लिए ?
सभी इंफ्रास्ट्रक्चर परियोजनाएं							
जल आपूर्ति : थातीपूड़ी सप्लाई पाइपलाइन का रिप्लेसमेंट	6228.00	3114.00	1020.67	2403.23	0.00	पूर्ण	क्या पानी की आपूर्ति बढ़ी ? गुणवत्ता सुधरी ? परियोजना में लिखा लक्ष्य पूरा हुआ ?
सीवर व्यवस्था पुराने विशाखापट्नम शहर में	3708.00	1854.00	562.10	1364.10	0.00	पूर्ण	क्या सफ़ाई व्यवस्था बेहतर हुई ? किस कीमत पर ? असली लाभार्थी कौन है ?
.....							
सभी बुनियादी सेवा (बी.एस.यू.पी.) परियोजनाएँ							
7352 घर एवम् **22** बस्तियों में सुविधाएं	142.27				0.00	पूर्ण	*किफायती आवास एवम् सेवाएं ? किसके लिए रोज़गार बचा ?*
...							

सभी रिफॉर्म्स (सुधार)	स्थिति	क्या हासिल हुआ ?
ई – गवर्नेंस : ➢ ई – गवर्नेंस का निर्वाह (स्थापित करना)	पूर्ण	क्या सेवाएँ मिलने से आसानी हुई ? क्या शिकायतें जल्द सुनी जाती है ?
भूमि / संपति : ➢ शहरी भूमि सीमा और विनियमन अधिनियम के निरसन	पूर्ण	क्या शहर में ज़मीन उपलब्ध हुई ? किसके लिए ? और कहां ?
जनता की भागीदारी : ➢ EWS/LIG (निम्न वर्ग) की आवासीय परियोजनाओं के लिए 25% भूमि निर्धारित करना	पूर्ण	इन परिवारों को कहाँ और कितनी भूमि दी गयी है ?

1. इस तरह की सूची से यह साफ हो जाएगा कि कौन कौन सी परियोजनाओं को स्वीकृति दी गयी है, यह कितनी पूर्ण हुई हैं, किसमें कितने पैसे खर्च किए गएहैं और इनमें किस वर्ग को फायदा पहुँच रहा होगा।
2. यह लोगों द्वारा उठाए जा रहे सवाल, जानकारी और पारदर्शिता की माँग को आवाज़ देने का एक अच्छा अवसर है। और लोगों की भागीदारी, सरकार और अफसरों की जवाबदेही बढ़ाने का अच्छा मौका है।

कदम 2

- ➢ कितना पैसा खर्च किया गया ? इसमें निजी पूँजी कितनी थी ? कितना पैसा केन्द्र सरकार से आया ? पूँजी केन्द्रित योजना से लोगों को फायदा हुआ ?

उदाहरण : दिल्ली

- o संरचनाओं में 6,795 करोड़ रू. खर्च हुए और इसमें से केवल 42% ही उपयोग किए गए। 32.5% केन्द्र सरकार से, 57% राज्य सरकार से, और बचे 10.6% नगर निगम से आया है। निजी निवेश का कोई योगदान नहीं है।
- o BSUP (बी.एस.यू.पी.) परियोजनाओं में रू 32 करोड़ खर्च हुए जो कुल लागत का 0.47% है।

- ➢ उन परियोजनओं को चुनना होगा, जिनकी आसानी से समीक्षा की जा सके। कोशिश हो कि एक परियोजना हर वर्ग से चुनी जाये। नगर निगम की वेबसाईट से तिमाही रिपोर्ट भी मिल सकती है।

उदाहरण : पुणे तिमाही रिपोर्ट जून 2012

परियोजना : बीआरटी कटराज स्वरगेट हडापसार रूट				
निविदा (टेंडर) की सूची (22 में से 3)		लागत (रू. लाख में)		क्या हम इसकी प्रगति का मूल्याकंन कर सकते हैं ?
क्र.	निविदा शीर्षक का संक्षिप्त शीर्षक	अनुमानित	स्वीकृत लागत	
1	सेलापुर रोड – फुटपाथ (भाग 1)	661.33	820.09	यह बनकर तैयार है ? इसे पैदल चलने वाले उपयोग कर रहे है ?
2	बस शेल्टर, गीपीएस, ई. टिकट	480.00	1463.00	शेल्टरों में क्या सुविधा है ? इसकी लागत इतनी ज्यादा क्यों है ?
3	सोलापुर रोड – यातायात सिग्नल	97.00	90.55	क्या यह काम करते हैं ? इतना खर्चा हुआ होगा ?

सुधारों की प्रगति				
क्र	समझौता की शर्तें	पूर्ण	वर्ष के दौरान प्रगति	क्या हम मूल्याकंन कर सकते हैं ?
1	संपत्ति कर : ईमानदार करदाताओं को छूट	2006–07	2009–10 में 2,60,000 सम्पत्तियों के लिए मंजूर किया गया	संपत्ति धारकों से बात हुई ?
2	ई – गवर्नेंस : कियोस्क	2006–07	144 वार्डों में जन्म/मृत्यु प्रमाण पत्रों के लिए 70 कियोस्क खोले गए	इन कियोक्स की जाँच की जा सकती है ?
3	पानी उपयोगकर्त्ता शुल्क	2005–06	14 करोड़ के विरूद्ध 106 करोड़ रू. वसूल किये गए (14 करोड़ मीटर द्वारा और 44 करोड़ संपति कर द्वारा)	उपयोगकर्ताओं से पानी शुल्क के बारे में बात की जा सकती है

- ➢ इन सभी परियोजनाओं को नक्शे में दर्शाया जा सकता है।

उदाहरण : जयपुर

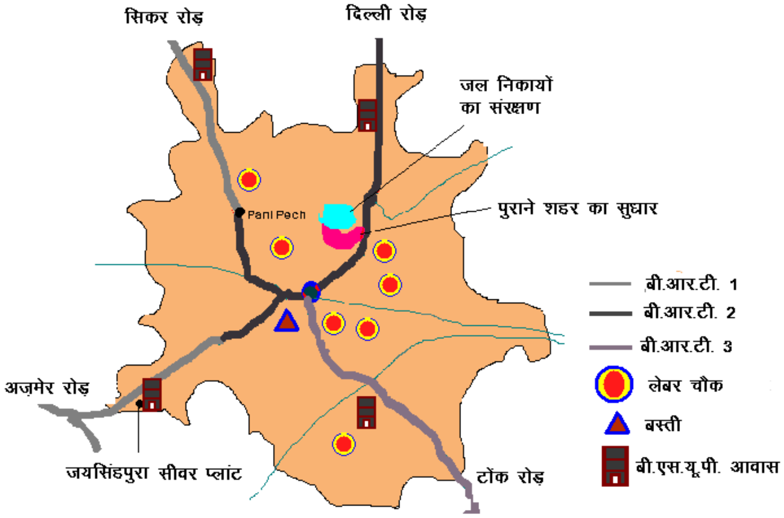

- इस नक्शे में झुग्गियां, मज़दूर, चौक और काम करने की जगह दर्शायी गयी है।
- क्या योजना मज़दूरों की रिहायिश और काम की जगह के अनुसार है ?
- क्या इन परियोजनाओं से गरीबों को लाभ पहुँचेगा ?
- क्या परिवहन गलियारे, यात्रा और काम के लिए सुविधाजनक हैं ?
- कितने लोगों को विस्थापित किया गया है ?
- क्या विस्थापित लोगों को सही तरीके से पुनर्वासित किया जा रहा है ?

कदम 3

निरीक्षण के लिए साइट पर जाएँ और पता लगाएँ 1) ठेकेदार कौन है 2) काम पूरा हुआ ? 3) कितना खर्च हुआ होगा ? 4) किसको फायदा है ? 5) गरीबों को लाभ मिला ?

यह सब जानकारी साइट नोटिस बोर्ड पर या स्थानीय नागरिकों के साथ बातचीत के द्वारा पाया जा सकता है।

जवाबदेही

- नगर–निगम में परियोजना कार्यान्वयन ईकाई है ?
- परियोजना पर अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए सूचना के अधिकार का उपयोग करें:

✓ निर्माण सामग्री की गुणवत्ता
✓ काम कितना पूरा हुआ
✓ विलंब के कारण
✓ लाभार्थियों की सूची

साइट नोटिस बोर्ड पर उपलब्ध जानकारी

उदाहरण : पटना

- *पटना बी.एस.यू.पी. योजना के लिए बस्तियों को ध्वस्त किया गया उजाड़ा गया ।*
- *2736 फ्लैटों के लिए 17128 परिवारों को उजाड़ा गया उनमें ज़्यादातर असंगठित श्रमिक थे।*

आर.टी.आई. से पता चला है कि :

- *34,000 घरों के निर्माण के लिए 320 एकड़ भूमि की आवश्यकता है।*
- *700 एकड़ ज़मीन जिला प्रशासन के पास उपलब्ध है।*
- *लेकिन जिला प्रशासन ने केवल 89.23 एकड़ ज़मीन उपलब्ध कराया।*
- *200 हेक्टेयर उपजाऊ भूमि बिल्डरों और डेवलपरों को दी जाएगी।*

इस जानकारी के आधार पर बिहार के मंत्रियों और विधायकों के साथ विचार विमर्श आयोजन किया गया जिसमें जवाबदेही माँगते हुए असंगठित श्रमिकों की मांगों को सामने रखा गया।

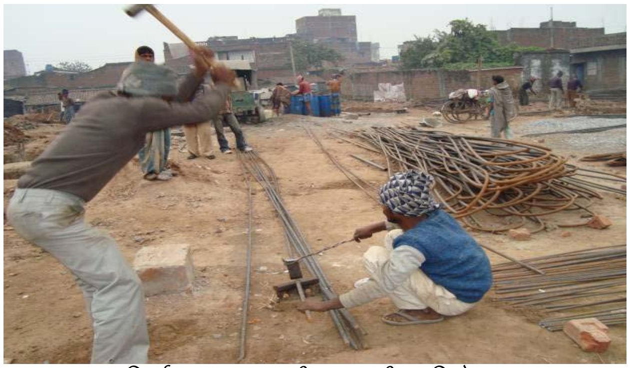

निर्माण स्थल – बी.एस.यू.पी. परियोजना

बस्ती उजड़ने के बाद स्थिति

कदम 4

- क्या परियोजना वास्तव में पूरी हुई ? (चुने हुए प्रतिनिधियों, स्थानीय नेताओं, अधिकारियों, वरिष्ठ नागरिकों और योजना स्थल पर श्रमिकों से बात करें)
- परियोजना की वास्तविक लागत क्या हे ? (एक अनुभवी इंजीनियर, ठेकेदार, लेखाकार, विशेषज्ञ को साइट पर ले चलें जो परियोजना लागत का एक मोटा अनुमान दे पायें।)
- क्या परियोजना के लाभ लोगों तक, विशेष रूप से गरीबों तक पहुँचा है ?
- 100 या अधिक लाभार्थी परिवारों के बीच प्राथमिकता सर्वेक्षण करें जिसमें 50% महिलाएँ हों।
- क्या ऐसे समूह हैं जो परियोजना के कारण विस्थापन, रोज़गार खोने की शिकायत कर रहे हैं ? अगर हाँ तो उनके अनुभव क्या रहे हैं ?
- स्थानीय मीडिया रिपोर्ट का परियोजनओं के बारे के क्या कहना है ?

।

उदाहरण : पिछले समीक्षा में सर्वेक्षण के लिए इस्तेमाल की गई जांच – सूची

बुनियादी सेवाओं की उपलब्धता	समुदायिक सेवाओं की उपलब्धिता	आवास की स्थिति	रोज़गार के अवसर	मासिक खर्च
यह पर्याप्त है या आवश्यकता से कम, आवश्यकता से बहुत कम, या मौजूद नहीं है				***(बढ़ा या घटा)***
• सार्वजनिक शौचालय • सार्वजनिक नाला • पक्की सड़कें • स्ट्रीट लाइटिंग • पक्का नाला	• कम्यूनिटी सेंटर • बाग/खेल का मैदान • प्रशिक्षण केन्द्र • आँगनबाड़ी	• उपलब्ध जगह • निजी स्थान • प्राकृतिक प्रकाश • वेंटिलेशन • सुरक्षा	• रोज़गार • आय में बदलाव • कार्य क्षेत्र	• भोजन और पानी • ईंधन और बिजली • परिवहन • स्कूल की फीस • शौचालय उपयोग • स्वास्थ्य, दवाई • कर्ज, भुगतान

उदाहरण : हैदराबाद सर्वे

बी.एस.यू.पी. के अधीन भीमराव बाड़ा, हैदराबाद में 4550 घर बने, जिसमें 81% लाभाथ्री 600 से 3,000 रूपये के बीच प्रति माह कमाई वाले दैनिक मज़दूर हैं । पुनर्वास के बाद :

- o सार्वजनिक शौचालयों की स्वच्छता और पानी की आपूर्ति की स्थिति दयनीय थी
- o वहाँ कोई सामुदायिक सेवाएँ नहीं थीं।
- o रहने की जगह बढ़ी है और वेंटिलेशन भी बेहतर हुआ है, लेकिन जगह कम सुरक्षित है।
- o आय 20% से 100% तक घटी है और बहुत लोगों के रोज़गार खत्म हो गये हैं।
- o मासिक खर्च और परिवहन लागत बड़ी।

हैदराबाद में **मीडिया** ने कई मुद्दें रिपोर्ट किये:–

- o आंध्र प्रदेश सरकार JnNURM में अपने हिस्से से अधिक फंड ले रही है और फिर भी वर्ल्ड बैंक से 1544 करोड़ ऋण चाहती है।
- o फंड में कमी, भूमि अधिग्रहण में देरी के कारण रु 3,000करोड़ की गोदावरी पेयजल परियोजना में देरी।
- o GHMC ने रु 1,000 करोड़ की सड़को मंजूर दी। 2008–09 में रु 3400 करोड़ के काम की मंजूरी, जबकि नगर निकाय का कुल बजट सिर्फ 2920 है।
- o बढें हुये किराये के कारण AC वोल्वो बसें खाली ही सड़को पर दौड़ रही है, और घाटे में चल रही है।

➢ **अनुभवी मज़दूर/ठेकेदार/इंजीनियर/विशेषज्ञ के लिए प्रश्न :**

- इस परियोजना के लिए इस्तेमाल की गयी सामग्री की गुणवत्ता क्या है ?
- संरचनाओं की आयु कितनी होगी ?
- प्रति वर्ग फुट की अनुमानित लागत क्या है ?
- क्या इस परियोजना के लिए किसी भी प्रभाव (सामाजिक अथवा पर्यावरणीय) का अध्ययन किया गया है ?
- प्रयोग की गयी सामग्री के हानिकारक प्रभाव हैं ?

कदम 5

यह पता करना ज़रूरी है कि JNNURM की सफलताएँ और असफलताएँ क्या रहीं हैं ?

लोग क्या चाहते हैं यह भी पता करना ज़रूरी है। तो हमारा सुझाव है कि कदम 4 प्राथमिक सर्वेक्षण के समय, विभिन्न वर्गों की जरूरतों और क्या वे वर्तमान स्थिति से संतुष्ट हैं, इस का पता लगाया जाए?

अमीर, मध्यम और निम्न वर्ग से 100/100 परिवारों का सर्वेक्षण किया जाए।

सर्वेक्षण फार्म के लिए कुछ सुझाव नीचे दिए गए हैं :–

	सेवाएं	उन्हें क्या मिल रहा है ?	यह संतोषजनक है ?	यदि हाँ, तो क्या सुधार हो सकता है?	यदि नहीं, तो वे क्या चाहते हैं ?	कितना पैसा दे रहे है ?	इतना दे सकते हैं
1	आवास						
2	बिजली						
3	पानी						
4	सीवर						
5	सफ़ाई						
6	नाली						
7	परिवहन						
8	स्वास्थ्य						
9	शिक्षा						
10	आजीविका						

कोशिश करें की सवालों का मात्रात्मक (आकड़ों में) जवाब मिले ताकि लोगों की जरूरतों के बारे में कुछ मानदंड तय किया जा सके। आप देखेंगे कि अमीर परिवारों की जरूरतों में और मध्यम वर्ग और काम कर रहे गरीबों की जरूरतों में काफ़ी अंतर है तो वे अलग से दर्ज़ किया जा सकता है।

उदाहरण : दिल्ली

पानी : 3000 परिवारों के बिच किये गये एक अध्ययन ने पानी की आपूर्त्ति, आवश्यकता और उपलब्धता पर प्रकाश डाला (लिटर प्रति व्यक्ति प्रतिदिन) :

पानी की आपूर्ति (अलग अलग आय वर्ग के लोगों के लिए)			उपलब्धता	आवश्यकता
निम्न आय वर्ग	मध्य आय वर्ग	उच्च आय वर्ग		
33 lpcd	250 lpcd	400 lpcd	225 lpcd	100 lpcd

बिजली : बिजली की खपत और आवश्यकता के लिए अध्ययन (यूनिट प्रति व्यक्ति प्रतिदिन) :

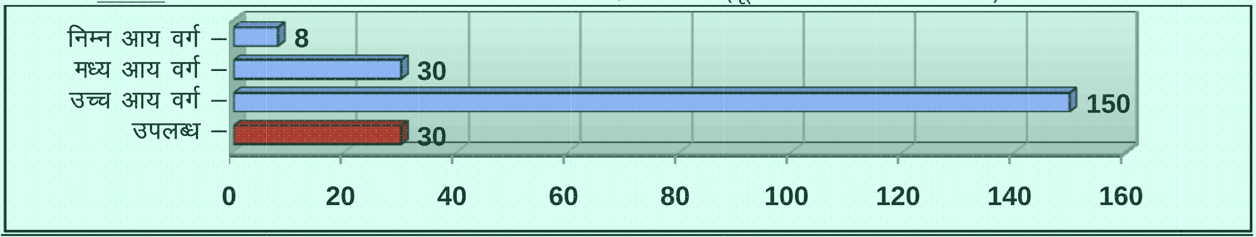

सड़कें : सड़कों पर विभिन्न वाहनो द्वारा लिए जाने वाली जगह, प्रदूषण और खर्च को निचे दिखाया है :

साधन	लोग	सड़क पर जगह	लागत (प्रति माह)	प्रदूषण (gCO2e/PMT)
उच्च आय वर्ग	20%	75%	Rs 1200	232
मध्य आय वर्ग	80%	2%	Rs 450	59
निम्न आय वर्ग			0	0

कदम 6

ऊपर के आँकड़ों से अब निम्न प्रश्नों का जवाब ढूँढा जा सकता है :

- क्या परियोजनाओं में कोई भी महत्त्वपूर्ण निजी निवेश आया है ?
- परियोजना निर्धारित लागत में पूरी कि गयी है ?
- क्या संरचना के विकास/बुनियादी सेवाओं, प्रशासनिक सुधार से नागरिकों को कोई फायदा हुआ ?
- इनसें गरीबों को क्या लाभ मिला है ?
- क्या गरीबों को परियोजनाओं के लिए विस्थापित, बेदखल, बेरोज़गार किया गया है ?
- विभिन्न वर्गों की क्या मांग हैं, और क्या उन को पूरा किया जा रहा है ?
- अगले JnNURM में क्या शामिल किया जाना चाहिए जिससे की नागरिकों, विशेष रूप से मेहनतकशों की ज़रूरतें कम से कम कीमत पर पूरी हों ?

यदि आपको इस प्रक्रिया के किसी भी स्तर पर किसी प्रकार की सहायता की जरूरत हो, तो कृपया हमें सूचित करें। खतरा केन्द्र से कोई न कोई पहुँचेगा।

जब समीक्षा पूरी हो गयी हो, तो अगर आप यह हमें भेज दें तो हम इसका संकलन करके सबकी तरफ से एक राष्ट्रीय रिपोर्ट प्रकाशित कर पायेंगे।

2009 के मध्यावधि समीक्षा में नागरिकों ने मंत्रालय के आगे स्पष्ट रूप से रखा था की :

- शहरी विकास योजना, स्वीकृत किये गए काम (परियोजना) और लोगों की जरुरतों मे कोई मेल नही है।
- निर्मित संरचना शहर की आर्थिक गतिविधि में सहायक नहीं है।
- शहर के असंतुलित खर्च और मौजूदा ऋण का विश्लेषण नहीं किया गया है।
- निर्णय निर्वाचित प्रतिनिधी नहीं बल्कि अधिकारी लेते है।
- फंड का पूरा उपयोग नहीं हो रहा हैं और परियोजनाओं को लागू नहीं किया जा रहा है।
- बड़े पैमाने पर देखा गया है कि विभाग जानकारी देने से मना करते हैं।
- कर और उपयोग राशि बढ़ गयी है और लोगों की आय में कमी आई है।
- भूमि उपयोग और भागीदारी (PPP)का लाभ निजी क्षेत्र को होता है जबकि जोखिम सार्वजनिक क्षेत्र उठाता है।
- निवेश का केवल 10% ही बीएसयूपी परियोजनाओं में लगाया गया है जबकि योजना के तहत् 40% निवेश तय किया गया था।
- परियोजनाओं का लोगो के जीवन और शहर पर असर नहीं मापा गया।
- सुविधाएँ उनको दी जा रही हैं जो उसकी कीमत दे सकते हैं, जिसका लाभ केवल अमीरों को मिल रहा है।
- गरीब को आवास और आजीविका के लिए भूमि की जरूरत है ना की फ्लैट की।

फरवरी 2011 में JnNURM के राष्ट्रीय सम्मेलन में लोगों ने तय किया था की :

- जब तक शहरी विकास मंत्रालय संरचना के विकास की सभी परियोजनाओं का सार्वजनिक रूप से लोगों, जनसंगठनों, समूहों, पार्षदों और निर्वाचित प्रतिनिधियों के साथ ऑडिट (लेखाजोखा और मूल्यांकन) नहीं करता है तब तक हम JnNURM 2 को शुरू करने के हर कदम का विरोध करते हैं।
- हम आवास और शहरी गरीबी हटाओ मंत्रालय से बी.एस.यू.पी. की परियोजनाओं के सार्वजनिक ऑडिट और, जब तक यह साफ नहीं हो जाता है की राजीव आवास योजना बी.एस.यू.पी. से बेहतर है तब तक उसको रोकने की माँग करते हैं।
- हम सरकार द्वारा नियुक्त ठेकेदार ग्रेंट थोरंटन की JnNURM मूल्यांकन रिपोर्ट और उच्च संचालित विशेषज्ञ समिति की इन्फ्रास्ट्रक्चर रिपोर्ट को नामजूंर करते हैं।
- जब इन परियोजनाओं में केन्द्र सरकार द्वारा दिए गए पैसों में से अभी तक रू. **20,000 करोड़** खर्च नहीं हुए हैं, तो वाणिज्य मंत्रालय, योजना आयोग को एसी किसी परियोजना के लिए और पैसे जारी नहीं करने चाहिए।
- हम स्वतंत्र रूप से, अपनी क्षमता अनुसार अधिक से अधिक शहरों में JnNURM की समीक्षा करेंगे।

ख़तरा केन्द्र
92 एच, तीसरी मंजिल, प्रताप मार्केट, मुनीरका
नई दिल्ली – 110067
011-26187806; hazardscentre@gmail.com

राजीव आवास योजना

प्र. **संपत्ति पट्टे का क्या मतलब है ?**
उ. राजीव आवास योजना के तहत् भूमि नहीं सिर्फ़ फ्लैट मिलेंगे (25sqm)।

प्र. **फ्लैट/संपत्ति लाभार्थियों को हमेशा के लिए दे दिया जाएगा ?**
उ. हर राज्य में अलग अलग समय के लिए लीज़ पर दिया जाएगा (10 से 90 साल)।

प्र. **यह सभी के लिए है या कोई कट ऑफ तारीख है ?**
उ केन्द्र ने जून 2009 कट ऑफ तारीख के रूप में दिया है लेकिन अंतिम निर्णय राज्य सरकारों के लिए छोड़ दिया है।

प्र. **क्या कोई कट ऑफ आय भी है ?**
उ. हाँ, केवल बी.पी.एल., ई.डब्लू.एस. (मासिक पारिवारिक आय 6,000 से कम) योग्य है और कुछ मामलों में एल.आई.जी. भी।

प्र **क्या बस्तियों को यथास्थान बसाया जाएगा ?**
उ. नहीं केवल योग्य बस्तियों को अपने वर्तमान स्थान पर बसाया जाएगा।

प्र. **योग्य और अयोग्य का क्या मतलब है ?**
उ. सुरक्षित और निवासीय क्षेत्रों को योग्य कहते हैं और जो नहीं उन्हें अयोग्य कहा जाता है।

प्र. **बस्ती योग्य है या नहीं यह कौन तय करता है ?**
उ. यह स्वामित्व और कीमत के आधार पर विशेषज्ञ समितियां तय करेंगी।

प्र. **योग्य बस्तियों में रहने वाले लोगों को भूमि दी जाएगी ?**
उ. नहीं, भूमि के एक हिस्से में बस्ती वासियों के लिए निजी कम्पनी द्वारा फ्लैट बनाकर दिया जाएगा।

प्र. **तो किन बस्तियों को यथास्थान सुधारा जाएगा और लोगों को ज़मीन दी जाएगी ?**
उ. जो बस्तियां सरकारी और कम कीमती ज़मीन पर स्थित हैं, जहाँ पर लोगों की संख्या अधिक हैं और जिसकी ज़मीन किसी अन्य परियोजना के लिए नहीं चाहिए।

प्र. **उपयोगकर्त्ता को फ्लैट के लिए कितना भुगतान करना होगा ?**
उ. 1 लाख और 2 लाख रूपये के बीच। वास्तविक राशि राज्य सरकार द्वारा तय की जाएगी।

प्र. **क्या इस राशि को एक ही बार में शुरूआत में देना होगा ?**
उ. नहीं, लेकिन पूरे कीमत का 20% शुरूआत में देना होगा।

प्र. **क्या बी.पी.एल. और ईडब्लूएस के परिवारों को ऋण (लोन) उपलब्ध करवाया जाएगा ?**
उ. हाँ, ऋण प्रदान किया जाएगा। ऋण का भुगतान नियमित मासिक किस्तों से करना होगा।

प्र. **किस्त कितना होगा और कितने साल देना पड़ेगा ?**
उ. लगभग 20 साल के लिए 2,000 रूपए प्रति माह।

प्र. **क्या होगा अगर कोई परिवार किस्तों का भुगतान नहीं दे सके ?**
उ. फ्लैट जब्त करके परिवार को बेदखल कर दिया जायेगा।

प्र. **संपत्ति बेचने का अधिकार दिया जाएगा ?**
उ. यह अधिकार ऋण के भुगतान करने से पहले नहीं दिया जाएगा, या कम से कम सात साल तक नही।

प्र. **क्या वहां पर कोई अन्य लागत देनी पड़ेगी ?**
उ. हाँ, रखरखाव व मरम्मत शुल्क (लगभग रू. 700–900 हर माह) और बिजली, पानी, सीवर व्यवस्था के लिए शुल्क देना होगा।

प्र. **क्या राजीव आवास योजना के तहत् फ्लैट मिलने के बाद परिवार बी.पी.एल. कहलाया जायेगा ?**
उ. नहीं । पक्के घर में रहने के बाद परिवार अब बी.पी.एल. नहीं रहेगा।

प्र. **क्या फ्लैट पत्नी या बच्चों को ट्रान्सफर किया जा सकता है ?**
उ. हाँ, यदि फ्लैट के मालिक का देहांत हो जाता है।

प्र. **क्या राजीव आवास योजना में लोगों की हिस्सेदारी और लोगों द्वारा खुद ही सर्वे के लिए कोई प्रावधान है ?**
उ. हाँ ! लोगों द्वारा खुद सर्वे और यथास्थान सुधर में समुदाय के लोगों की हिस्सेदारी के लिए प्रावधान है।

प्र. **क्या राजीव आवास योजना को कार्यान्वित करने के लिए फिर सर्वे किया जाएगा ?**
उ. जरूरी नहीं ! काफी राज्यों में पुराने सर्वे का उपयोग किया जा रहा है।